eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

शिवप्रसाद सिंह के कहानी–साहित्य में चरित्र प्रधान कहानियों का सृजन

[1]डॉ0 वाचस्पति

[1]एसोसिएट प्रोफेसरः हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज एटा (उ0प्र0)

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

समकालीन कथाकारों ने समाजवाद की स्थापना में बाधक तत्वों के प्रति गुस्सा, आक्रोश जाहिर किया है लेकिन ईमानदारी, जनसेवी, संघर्षरत चरित्रों को अपनी पूरी हार्दिक सहानुभूति और समर्थन भी दिया है। आज देश के सामने सबसे बड़ी गम्भीर समस्या मानवीय मूल्यों का निरंतर ह्रास होते जाना है। "हमारी मान्यता है कि हिन्दुस्तानी दुनिया के किसी भी कौम के लोगों से न तो कम समझदार हैं और न कम मेहनती हैं।

Key words:- शिवप्रसाद सिंह, कहानी–साहित्य, चरित्र प्रधान कहानियां, सृजन, समाजवाद।

गड़बड़ी वहाँ शुरू होती है जहाँ अच्छे काम का सिला नहीं मिलता और बेईमानों, कामचोरों और चालबाजों की पांचों उंगली घी में होती हैं तब ऐसी स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं जब समाज के मूल्य बदलने लगते है और बेईमानी को ऊपर चढ़ने की अकेली सीढ़ी समझा जाने लगता है। जिस समाज में सत् को दंडित और असत् को पुरस्कृत किया जाता हो वहाँ ये सब आचार मूल्य अगर उलट–पुलट जायें तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है लेकिन समकालीन भारतीय जनमानस इस स्थिति से बुरी तरह बौखला गया है।"1 लेकिन आज का साहित्यकार समाज की विकासमान और स्वतंत्रता प्रेमी शक्तियों के साथ आज चारित्रिक ईमानदारी से संघर्ष कर रहा है। "युवाओं का एक वर्ग ऐसा है जो अपनी शक्ति, प्रतिभा और सामर्थ्य का गलत, असंगत और विनाशकारी प्रयोग न करके रचनात्मक कार्यों में प्रयोग कर रहा है। स्वस्थ और ईमानदार जीवन मूल्यों के लिए संघर्ष करते हुए इस वर्ग का युवा अपनी जान पर खेल जाता है तथा रिस्की व एडवेंचरस कदम उठाने में भी नहीं हिचकता।"2

शिवप्रसाद जी ने अपने समकालीन लेखकों की रचना प्रक्रिया से अलग हटकर अपने कथा चरित्रों का सूक्ष्म अन्वेषण किया है इसलिए बहुतायत कथाकारों का यह आरोप कि उनकी कहानियाँ

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

संस्मरण और रेखाचित्र सी हो गयी हैं, बहुत हद तक सही भी है फिर इसे आरोप क्यों कहा जाय? क्योंकि भीगी हुई अनुभूतियाँ और चरित्र के प्रति स्वाभाविक लगाव के कारण ये कहानियाँ इसी शिल्प में आ सकती थीं। दरअसल लेखक भी इन चरित्रों के माध्यम से अपने को खोज रहा था, सामाजिक नक्शे में अपनी स्थिति का अन्वेषण कर रहा था। अतः उसमें विशेष रूप से अछूते पात्रों और अनुभवों को अभिव्यक्ति का विषय बनाया इसलिए अपेक्षित, अभिशाप्त और पीड़ित रह आये लोगों को अपनी कहानियों में अंकित करने की पहल की। "आर–पार की माला" शीर्षक कहानी ही खानादोश कंजरों को लेकर थी। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने "पापजीवी", "बिन्दामहाराज", "सपेरा", "माटी की औलाद", "इन्हें भी इंतजार है", "रेती" और "बेहया" आदि कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों में मुसहर, चमार, कुम्हार, भंगी, कंजर, नट, केवट, भांड और वेश्या पात्रों की केवल केन्द्रीय स्थिति ही नहीं मिली बल्कि पर्याप्त संवेदना और सहानुभूति के साथ कथाकार ने उनके चरित्र में छिपे मानवीय तत्वों को भी उजागार किया। उनकी रचना प्रक्रिया की एक निजी प्रमाणिक विशेषता है कि पचास प्रतिशत से अधिक कहानियों की प्रेरणा में चरित्रों का योग है। चरित्र और उनके कर्म उन्हें बहुत–बहुत आकृष्ट करते हैं। यानी सृजन–प्रक्रिया की दृष्टि से इन्हें परिस्थितियों से संवेदित आश्लेषित चरित्र पहले आकृष्ट करते हैं। वैसे अन्य ग्राम कथाकारों ने भी अपनी कहानियों में चरित्रों की प्रधानता दी है मगर इसके विपरीत महानगरीय कथाकारों का प्रेरणा स्त्रोत परिचमी साहित्य का नकल रहा है। परिणामतः हिन्दी नवलेखन आस्थाहीन, दिग्भ्रमित और अधिक से अधिक व्यक्ति केन्द्रित होता गया। क्षुब्ध, बीमार, विभुक्षित और बीट पीढ़ियों का जन्म इसी अतिवादी केन्द्रन का परिणाम है।

कथा–साहित्य में चरित्रों को लेकर उनके वर्गगत अथवा व्यक्ति होने की बात भी चलाई जाती है। एक बार प्रेमचंद के गाँव से अपने गाँवों को पृथक करते हुए कथाकार शिवप्रसाद सिंह ने कहा था "प्रेमचन्द के चरित्र वर्गगत चरित्र हैं, इस कारण वर्ग की ऊपरी विशेषताओं का ज्यादा चित्रण हुआ है। इसके विपरीत मेरी कहानियों का प्रत्येक पात्र अपने वर्ग की विशेषताओं को रखते हुए भी अपनी कुछ निजी विशेषताएं रखता है। यानी मेरे पात्रों में वर्ग और निजी दोनों चरित्र मिलते हैं।"3 चरित्र सृष्टि के संदर्भ में भी कथाकार का कथन है कि "चरित्रों का निर्माण करते समय कई व्यक्तियों की छायाएँ एक में मिल जाती है। यहाँ संयोजन की प्रधानता होती है। कुछ विशेषता किसी चरित्र की और कुछ किसी अन्य चरित्र की मिलाकर एक नया चरित्र बना लिया जाता है। कुछ चरित्र

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

उपन्यास की धारा में मिलकर स्वयं गठित हो जाते हैं।"4 छोटे चरित्र ज्यादातर स्वयं गठित हो जानेवाले चरित्र होते हैं। जैसे "मुरदा सराय" का माझी झूरी आदि ऐसे ही चरित्र हैं। "आर पार की माला" में भी ऐसे बहुत से पात्र है। दयाल पंडित भी ऐसे ही हैं। इसी प्रसंग में कथाकार ने यह स्वीकार किया है कि उसके चित्त में पहले चरित्र ही एकत्र होते है, फिर उसके इर्द–गिर्द घटनायें सिमटती है।

ग्राम कथाकार शिवप्रसाद सिंह जी की कहानी में जीवंत–यथार्थ, आकर्षक–उपेक्षित, बड़े–छोटे, अच्छे–बुरे, दुर्बल–सबल सभी प्रकार के चरित्रों की भरमार है। इनकी कहानियों में प्रमुख स्त्री पात्र "दादी माँ", "नन्हों", "गुलाबों", "सुभागी", "तिऊरा", "कबरी", "रचना", "अरुन्धती, "नैना" आदि हैं तो पुरुष पात्रों में भैरव पाण्डेय, फुन्नन मियाँ, अर्जुन पाण्डेय, श्यामलाल पगला, बाबा, रोपन, विन्दा महाराज आदि विश्वसनीय है। भेड़िये कहानी संग्रह की "एक वापसी और" शीर्षक कहानी में एक ऐसा भी गुमनाम पात्र है, जिसकी आँखों में एक अजीब तरह की समझदारी थी, जो नवजादिक को हर तरफ से बाहर से भीतर से छू रही थी। नवजादिक रास्ते भर यही सोचता रहा कि क्या वह आकृति कभी धुंधलके से बाहर भी आयेगी या नहीं। वास्तव में यह चरित्र, सृष्टि सर्वथा मौलिक और अद्वितीय है। कहानी में पात्र–विशेष का एक प्रभावपूर्ण मर्मस्पर्शी अंश ही अभिव्यक्त हो पाता है। कहना नहीं होगा कि शिवप्रसाद सिंह के ग्राम कथा में अपरिवर्तनशील और विकासशील दोनों प्रकार के चरित्र चित्रित है।

चरित्र निर्माण की प्रणालियों में पात्रों के कथोपकथन और लेखकीय कथन की प्रणालियाँ तो ग्राम–कथा में पहले से प्रयुक्त होती आयी है। शिवप्रसाद सिंह ने इनके अतिरिक्त पात्रों के बाहर और आंतरिक रूप के विश्लेषण के लिए अनेक आधुनिक मनोवैज्ञानिक प्रणालियों का भी उपयोग सफलतापूर्वक किया है कि कहानी में किसी प्रकार की जटिलता नहीं आती है बल्कि एक नैसर्गिक विकास ही परिलक्षित होता है। शिवप्रसाद सिंह के पात्र किसी मतवाद या सिद्धांत के स्पष्ट प्रतिनिधि नहीं हैं, इससे कथाकार को सहज परहेज है जो उसकी मौलिकता प्रकट करती है, पर "कहानियों" की कहानी में महुआ, काकी, रोज, जाहन्वी माया इस संदर्भ के प्रतिनिधि पात्र बन गये हैं। कथा की कल्पना में ही चरित्रों की विद्यमानता निहित है। "आर्नाल्ड बेनेट" के शब्दों में कथा–ग्राम का मूल आधार चरित्र ही है, अन्य कुछ नहीं। ऐसा इसलिए कि कथा मूलतः मनुष्य की होती है। गोर्के जैसे ग्राम कथाकार भी मानते है कि "संसार का हर सत्य मनुष्य के लिए है, वहीं हर

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

सत्य का उद्देश्य है, मनुष्य के बाहर कोई सत्य नहीं। "द मैन इज आवर गॉड" – मेरा पवित्रतम आराध्य है मानव उसका शरीर, मेधा, बुद्धि, प्रेरणा और प्यार। अतः अपनी रचना में पात्रों के माध्यम से ही कहानीकार मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है। मनुष्य का विकास चरित्र–विकास या चरित्र–प्रधान की प्रक्रिया का ही परिचय देता है। हिन्दी में ग्राम कथा की यह शुरूआत "प्रेमचंद" और "जयशंकर प्रसाद" ने कहानी को चमत्कारपूर्ण तिलस्मी घटनाओं की भूलभुलैया से बाहर लाकर जीवन के रू–ब–रू खड़ा करने के लिए उसे मनुष्य के साथ जोड़ दिया।"5 कहानीकार ने चरित्र प्रधान कथा लिखना शुरू कर दिया। डॉ0 सुमन मेहरोत्रा का स्पष्ट मत है कि शिवप्रसाद सिंह जी की इस काल की सभी कहानियाँ लगभग चरित्र प्रधान हैं। शैली कोई भी रही हो पर सम्पूर्ण कहानी का पात्र और उससे संबंधित उसका चरित्र ही कहानी को बनाता है। "मुझे कहानी लेखन के लिए जो सबसे अधिक विवश करती है, वह है मनुष्य का चरित्र ये पात्र क्या है, मेरी कहानियों के अधिकतर पात्र उपेक्षित, तिरस्कृतम माटी के ढेले ही तो हैं अथवा बबूल के सूखे पेड़ जो किसी राह चलते पंथी को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाते।"6

चरित्र को केन्द्र में रखकर कहानी के गठन की प्रक्रिया को आप पुरानापन नहीं मानते और मानव पदार्थ को सामान्य पदार्थों या वस्तुओं से भिन्न करते हुए उसे सचेतनता और सृजन–प्रक्रिया के लिए एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं। उन्हीं के शब्दों में हम किसी भी मनुष्य को उस रूप में नहीं समझ सकते जिस रूप में हम मेज–कुर्सियों या किताबों को समझते हैं। मनुष्य को सिर्फ एक ही प्रकार से अवगत किया जा सकता है, वह है उसकी सम्पूर्ण परिस्थितियों के बीच स्थिति का अवबोध। जड़ पदार्थ अनंत रूपों में विभाज्य हैं। किसी कटे–पन्ने को देखकर निश्चित किताब का जहाँ से वह पन्ना लिया गया है, का अवबोध संभव नहीं है किन्तु मात्र सिर, हाथ, उंगली, दाढ़ी या आखें देखकर एक मानव सत्य का बोध होता है कि ये मनुष्य शरीर के अवयव हैं। फिर व्यक्ति उस प्रकार से हमारे अध्ययन का विषय बनने को तैयार नहीं होता, जैसे जड़ पदार्थ हो जाता है।

शिवप्रसाद सिंह जी की दृष्टि में यह बहुत कठिन और सूक्ष्म कथाकथ्य है कि चरित्र की अभिव्यक्ति एक निश्चित 'आइडिया' एक सूक्ष्म कथ्य का रूप ले ले। इसके लिये कुछ और उच्चस्तरीय चेतना की आवश्यकता होती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि शिवप्रसाद सिंह में यह चेतना विद्यमान है। इन्होंने चरित्र को एक आइडिया बनाने की चुनौती के रूप में स्वीकार किया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

ग्राम–जीवन में अधिकांश चरित्रों का चुनाव कर ऐसा करने का भरसक प्रयास किया है। चूंकि ग्रामांचल को इन्होंने भलीभांति जाना–पहचाना है। तथा इनके चरित्रों के बाहर और आंतरिक रूपों को ये सुविधापूर्वक ज्यादा आसानी से समझते है। अतः इनको अपने इस प्रयास में पर्याप्त सफलता भी मिली है। इसे स्पष्ट करते हुए मधुरेश ने लिखा है कि शिवप्रसाद जी के कथा लेखन पर यह प्रभाव अपने गुरुदेव डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी और शरदचन्द्र से अवश्य कहीं न कहीं प्रभावित सा लगता है। "कहानियों की गढ़न और पात्रों की तराश पर शरदचन्द्र और हजारीप्रसाद द्विवेदी के प्रभाव को आसानी से पकड़ा जा सकता है। लेकिन शिवप्रसाद सिंह की इन कहानियों की शक्ति और प्रभावक्षमता का रहस्य यही है कि उन्होंने न तो सिर्फ अछूते क्षेत्रों और पात्रों के लिए ही इन कहानियों की रचना की और न हीं दूसरे बड़े लेखकों का प्रभाव उस पर इतना घनीभूत और आतंककारी है कि उनके स्वतंत्र विकास की संभावनाओं को ही नष्ट कर दे।"7 शिवप्रसाद सिंह का जीवन भी चरित्र प्रधान रहा है। इससे उनके तमाम पात्र अपने संपूर्ण अस्तित्व में अर्थवान हो उठे हैं। बोधन तिवारी "हीरों की खोज", "देऊ दादा", "दादी माँ", "उपधाइन मैया", "भैरो पाण्डे – कर्मनाशा की हार", "नन्हों", जगपती कर्ज, मुसम्मात नैना धरातल आदि। सबके सब पूरी आस्था, विश्वास और साहस श्रम के साथ यह वरण करते हैं। इन्हीं के समानांतर एक लंबी श्रृंखला उन मनुष्यों की भी है जो तमाम दबावों के बीच यह वरण चाहते हुए भी नहीं कर पाते। स्थितियों–सामर्थ्यों के इसी द्वन्द्व का अध्ययन हमने "धारा और धारा के भीतर–बाहर" शीर्षक के अंतर्गत किया है पर अब यह अस्तित्ववादी चिंतन की सर्वनिष्ठता ही है कि इन्हें वह भी अपने दायरे में समेट लेता है। पर ये सबकी सब कहानियाँ अस्तित्ववादी नहीं होने पायी है क्योंकि ये सभी पात्र अस्तित्ववादी सिद्धांतों को प्रमाणित करने के लिए नहीं रचे गये और न हीं दर्शन के छटाटोप से घिरे ही हैं।

कहानी के नये संदर्भ को ध्यान में रखते हुए जिस प्रकार घटनाओं के समूह को "कथानक" नहीं माना जा सकता उसी प्रकार "पात्रों" के "चरित्र" को पर्याय भी नहीं कहा जा सकता है। चरित्र वह विशेष प्रतिमा है जो पात्रों के व्यवहार–जगत के बीच से अचानक ही कहानी के सविशेष पर प्रकाशित हो उठती है। कहानी में चरित्रों की प्रतिष्ठा जीवन और परिस्थिति के बीच के यथार्थ संबंधों के रूप में होनी चाहिये। आधुनिक कहानियाँ चरित्रों को परिस्थितियों के अधिक गहरे परिपार्श्व में चित्रित करती हैं और उन्हें रचनाकार के भाव–बोध का वाहक यंत्र नहीं बनने देतीं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

आधुनिक कथाकारों ने कथा–साहित्य में चरित्र–चित्रण की समस्या को अधिक जटिल बना दिया है। अब कथा में साधारण या असाधारण सभी प्रकार के चरित्रों के मनोगत व्यापारों और क्रियात्मक आचरण को अधिक गहराई से देखने की आवयकता का अनुभव किया जाने लगा है। अंतरंग चरित्र विकास में नये मनोवैज्ञानिक प्रयोग हो रहे हैं और बाह्योपचाराधारित छोटी–मोटी बातों को भी चरित्र विकास में सहायक मानकर उनका सूक्ष्म आंकलन होता है। "कथाकारों ने वर्णन और पात्रों के कथोपकथन द्वारा चरित्र–चित्रण की पुरानी पद्धति के अतिरिक्त नये कथा–साहित्य में चरित्र–चित्रण शिल्प का नवीन विकास हुआ। चरित्र–चित्रण की नयी प्रणालियों के अविष्कृत हो जाने से आधुनिक कहानियों में कभी–कभी चरित्र अनुभव की तात्कालिक चेतना के बोध से इस तरह सम्पृक्त दिखाई देते हैं कि उनके व्यक्तित्व की कोई रूपरेखा दिखायी नहीं देती। इसी प्रकार चेतना पद्धति ने आधुनिक लेखन में चरित्र को समय और स्थान से मुक्त निरपेक्ष रूप में देखने की क्षमता दी है।"8

लेखक की उत्तरकालीन कहानियों में अस्तित्ववादी दर्शन का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है, जिसके चलते कहानी के चरित्रों में बदलाव आता है। अतः "मुरदासराय" तक आते–आते कहानीकार की वह आस्था टूटने लगती है। यही अस्तिववाद पर लिखने का दौर भी है। अतः उसका प्रभाव भी मस्तिष्क पर छाया रहता है और तब "मुरदासराय" की कुछ कहानियों में भग्नाशा, कुण्ठा, घुटन, अनिर्णय, विवशता, उहापोह, मानसिक यंत्रणा आदि से गुजरते पात्रों में संत्रास की स्थितियाँ चित्रित हुई हैं। अरुन्धती और अवधू इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसमें अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। बड़की बहू में अब कुछ सोचने–समझने की ताकत भी नहीं रहीं। लहरों ने हर प्रतिशोध को तोड़ दिया था। आज बड़की बहू का अस्तित्व किसी दूसरे के अधीन था। "हर क्षण जिसका लौह शिकंजा उनके गले में कसता जा रहा था। उसी शाम एक संत्रास और अचानक बड़की बहू के मन में फिर से अभिमान का अंकुर सुगबुगाने लगा, जैसे उन्होंने पानी में बहते अपने निरर्थक अस्तित्व को पुनः हाथों से पकड़ लिया हो। तभी बड़की बहू को लगा कि अचानक जैसे राख में ढकी–बुझी आग पर किसी ने एक चुल्लू किरासन का तेल डाल दिया है। भकभक करती एक बदबूदार लपट उनके पूरे जिस्म को ढंक लेने के लिए उछल रही है और तभी उन्होंने अपनी आखों के सामने वह दृश्य देखा लाखों–लाख हाथ, मुट्ठियों में बंधे हाथ, नहीं हाथों का जंगल लहरा रहा है। हर मुट्ठी इस तरह भिंची जैसे घृणा और हिकारत ने उनके भीतर नसों में बहते खून में छरछराने वाला घातक जहर मिला है।"9 इस प्रकार कथाकार ने इस कहानी में चरित्र की एक नयी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

उद्भावन शैली का प्रयोग किया है जो उनकी पूर्व कहानियों से काफी अलग है इसलिए यह कहानी काफी चर्चित भी रही है।

अस्तित्ववादी संत्रास का जितना बेलौस वर्णन "बिन्दा महाराज" में हुआ है उतना और कहीं नहीं। उसमें यथार्थ जीवन की एक्सर्डिटी पूरी बेबसी के साथ उभरी है। उसका सशक्त प्रभाव पाठक पर एक अमिट छाप छोड़ जाता है। समाज के सलूकों से अपने ही अस्तित्व के प्रति उनके मन में संदेह पैदा हो जाता है। इससे बड़ी विसंगति और क्या होगी। सारे स्नेह–राग के बावजूद मिश्राइन के दरवाजा बंद कर लेने का कारण और उनकी दाहक आँखों का मर्म बिन्दा महाराज समझ न सका यह थियरी के मुताबिक भी संत्रास का सही रूप है। जहाँ विसंगति के कारणों से भी व्यक्ति अनजान है। "इस अनबूझे व्यवहार की प्रतिक्रिया शरीर में दर्द भरी कंपकपी, भट्ठी के धुंए की तरह दमघोंटू कमरा डूबती उतराती आहत आत्मा में ताप बढ़ता जा रहा था। सिर फटने लगा। भयंकर पीड़ा से वह कराह उठा।"10 बेशक बिन्दा महाराज की पाठक की संवेदना को एक गहरी चोट देकर तिलमिला देती है क्योंकि उसके अस्तित्व और मानसिक संत्रास की पीड़ा अपने समाज के ऊपर एक व्यंग्य है, जिसे वह मनोरंजन का साधन मात्र समझती है। वह बच्चे–बूढ़े नौजवान और नारियों के लिए अलग–अलग हित साधन है। इसके अतिरिक्त, वहीं किसी प्रकार के रागात्मक प्रेम संबंध के काबिल नहीं है। अंत में बिन्दा महाराज का अपने आप से घृणा ईश्वर और मनुष्यता पर मजाक है।

इसी प्रकार "नन्हों" कहानी भी अपने गाँव समाज और धर्म की एक नयी असलियत से परिचित कराती है। "नन्हों" का पूरा चरित्र नितांत मनोवैज्ञानिक है। उसका सारा कार्य–व्यवहार सामाजिक कहानी के कुचक्रजन्य अभिशाप की प्रतिक्रिया है। वह रामसुभग से बेहद प्यार करती है चेतन मस्तिष्क से। जब कभी उसकी तरफ से नेकट्य का कोई प्रयास होता है, नन्हों सहसा पलट जाती है, फटकार देती है उसे। ऐसे प्रसंग कहानी में दो बार आये हैं और दोनों बार की फटकार मैं उसके अवचेतन का मनोविज्ञान देखा जा सकता है। रामसुभग के हाथ पकड़ लेने पर "सरम नहीं आती तुम्हें, बड़े मर्द थे तो सबके सामने बांह पकड़ी होती, तब तो स्वांग किया था, दूसरे के एवज बने थे, सूरत दिखाकर ठगहारी की थी।"11 दूसरा झटका रामसुभग को तब जब उसका पति लंगड़ मर जाता है और वह उसके नाम पर उसकी याद में जीने का संकल्प दुहराती है।

इस प्रकार चरित्र का संबंध जहाँ तक क्रिया से है, उसमें विचार की एक बात प्रत्यक्ष है कि किसी कहानी में संलग्न किसी पात्र को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि उसके चरित्र की कौन–सी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

विशेषता इससे लक्षित होती है अथवा किस कोटि की प्रेरणा उसे उत्साह प्रदान कर रही है। चरित्र की यथार्थ भंगिमा का यदि स्वरूप समझना होगा तो यह देखना आवश्यक होगा कि जिस कहानी में वह पात्र संलग्न है, उस क्रिया के मूल में चरित्र की कौन–सी वृत्ति काम कर रही है। कहानी में पात्रों का चित्रण सरल होता है जिनका समगति से विकास होता है। अर्थात् जिनकी चारित्रिक गतिविधि एक रस, एक रूप आदि से अंत तक चली चलती है।

संदर्भ सूची

1. अमृतराय – आधुनिक भाव बोध की संज्ञा पृ. 69
2. डॉ. प्रेमकुमार – हिन्दी कहानी – आठवाँ दशक पृ. 53–54
3. शिवप्रसाद सिंह – कहानी : नयी कहानी – पृ. 38
4. सारिका पृ. 15
5. सत्यदेव त्रिपाठी– शिवप्रसाद सिंह का कथा साहित्य पृ. 86
6. शिवप्रसाद सिंह– चतुर्दिक पृ. 202
7. संपादक अरुणेश नीरन – शिवप्रसाद सिंह पृ. 144
8. डॉ. परमानंद श्रीवास्तव – हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया पृ. 44
9. शिवप्रसाद सिंह – एक यात्रा सतह के नीचे "मुरदासराय" पृ. 298
10. शिवप्रसाद सिंह – कर्मनाशा की हार बिन्दा महाराज पृ. 70
11. शिवप्रसाद सिंह – एक यात्रा सतह के नीचे – "'नन्हों" पृ. 19